स्वप्न विमर्श

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

ज्योतिष विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

हल्द्वानी, नैनीताल

स्वप्न मानव जीवन का अभिन्न अंग है। सृष्टि का प्रत्येक मानव अपने-अपने सम्पूर्ण जीवन के कालखण्डों में कभी न कभी स्वप्न अवश्य ही देखता है। प्रथमतया यदि देखा जाय तो स्वप्न को लेकर मन में अनेक विचार आते-जाते हैं। कभी अत्यन्त प्रसन्नता होती है, कभी मन दु:खी हो जाता है तथा कभी-कभी स्वप्न प्रभाव से भय की स्थिति भी उत्पन्न होने लगती है। इस प्रकार स्वप्न के भी विविध रूप होते हैं। अब प्रश्न उठता है कि यह सब क्यों होता हैं? स्वप्न क्यों आते हैं? स्वप्न का अलग-अलग रूप क्यों होता हैं? स्वप्नों का शुभाशुभ फल क्या होता है? यह अत्यन्त रोमांचित करने वाला अथवा कौतूहल का विषय है। जब हम स्वप्न के प्रभावों को देखते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि स्वप्न कभी-कभी भावी किसी घटना की पूर्व सूचना देते हैं, कभी-कभी बिल्कुल निरर्थक हो जाते हैं, तथा कभी-कभी हर्ष अथवा विषाद के भाव मन पर देर तक के लिए छोड़ जाते हैं। स्वप्न का उल्लेख सृष्टि का प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद में मिलता है इसके अतिरिक्त अथर्व वेद में भी स्वप्न का वर्णन प्राप्त होता है। इसी प्रकार पुराणों के अन्तर्गत मुख्यत: अग्नि पुराण, मत्स्य पुराण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराणों में शुभाशुभ स्वप्न फल का उल्लेख हमें मिलता है। ज्योतिष शास्त्रान्तर्गत 'स्वप्न कमलाकर' ग्रन्थ में और संहिता तथा शकुनादि के ग्रन्थों में भी न्यूनाधिक स्वप्न विवेचन द्रष्टव्य होता हैं।

संस्कृत वाङ्मय में **'स्वप्न विद्या'** को परा विद्या का अंग माना गया हैं। अतः स्वप्न के माध्यम से सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयास भारतीय ऋषि, मुनि और आचार्यों ने किया हैं। फलतः भारतीय मनीषियों की दृष्टि में स्वप्न केवल जाग्रत दृश्यों का मानसलोक पर प्रभाव का परिणाम मात्र नहीं हैं, न तो कामज या इच्छित विकारों का प्रतिफलन मात्र है। सामान्य रूप से वेदान्त की विधा में कहा जाए तो स्वप्न लोक की तरह या दृश्य लोक क्षणभंगुर हैं। इससे स्वप्न का मिथ्यात्व सिद्ध होता हैं। रज्जु में सर्प का भ्रम कहा जाए तो स्वप्न में भिखारी का राजा होना भी भ्रम मात्र ही हैं; परन्तु स्वप्न को आदेश मानकर राजा द्वारा अपने राज्य का दान, स्वप्न में अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र की दीक्षा प्राप्ति आदि उदाहरण भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिलते हैं। त्रिजटा ने जो कुछ स्वप्न में देखा उसको अपूर्व प्रमाण मानकर श्री हनुमान् जी ने लंका दहन किया। ये सब ऐसे उदाहरण हैं जो स्वप्न में विद्या को दैविक आदेश या परा अनुसंधान से जोड़ते हैं। स्वप्न चिन्तन जब शास्त्र का रूप ग्रहण करता है तो निश्चित ही उसकी चिन्तना पद्धति मूर्त से अमूर्त काल में प्रवेश कर जाती हैं। इसमें संशय नहीं है।

स्वप्न के कारण

स्वप्न के कारणों को जानने के लिए हमें अपने शरीर की अवस्थाओं को जानना आवश्यक होगा। हमारे शरीर की प्रतिदिन तीन अवस्थायें होती है – १. जाग्रत २. सुषुप्ति ३. स्वप्न।

१. जाग्रत अवस्था में मानव पूर्ण चैतन्य होता है, उसकी सभी इन्द्रियाँ क्रियाशील एवं चैतन्य होती हैं। मनुष्य अपनी इच्छानुसार तथा अपनी कल्पनानुसार कार्य करता है।

२. सुषुप्ति अवस्था में मनुष्य की सभी इन्द्रियाँ शिथिल एवं चेतना शून्य हो जाती हैं। उन्हें किसी क्रिया का आभास नहीं होता है। पूर्ण निद्रा की अवस्था ही सुषुप्ति अवस्था होती है।

३. स्वप्न अवस्था जाग्रत एवं सुषुप्ति के बीच की होती है। इसमें शरीर शिथिल एवं संज्ञान शून्य होता है, किन्तु मन सक्रिय रहता है, जिसे आधुनिक मनौवैज्ञानिक अचेतन मन कहते हैं। जब मनुष्य न सुप्तावस्था में हो न जागृत अवस्था में हो तो एक अद्भुत स्थिति बन जाती है। इस अवस्था में अनेक प्रकार के दृश्य दिखलाई पड़ते है। स्वयं वह व्यक्ति उस दृश्य का एक सक्रिय पात्र होता है। स्वप्न में दौड़ना, उड़ना, डूबना, तैरना, भोजन करना, क्रीड़ा करना, भयभीत होना आदि क्रियायें यथार्थतः प्रतीत होती हैं। इतना ही नहीं स्वप्न देखने वाला व्यक्ति उन समस्त घटनाओं से सम्बन्धित हर्ष एवं विषाद का अनुभव भी करता है।

स्वप्न की परिभाषा -

अतीत की घटनायें अचेतन मन में बिना किसी क्रम के दृश्य होती है, उसे ही **स्वप्न** कहा जाता है।

स्वप्न प्रकार -

स्वप्नकमलाकर ग्रन्थानुसार स्वप्न को चार प्रकार का माना गया हैं) -1) दैविक स्वप्न (2) शुभ स्वप्न (3 ( ) अशुभ स्वप्न और4मिश्र स्वप्न। (

दैविक स्वप्न को उच्च कोटि को साध्य मानकर इसकी सिद्धि के लिए अनेक मंत्र और विधान भी दिये गये हैं। स्वप्न उत्पत्ति के कारणों पर विचार करते हुए आचार्यों ने स्वप्न के नौ कारण भी दिये हैं) -1) श्रुत (2) अनुभूत (3 दृष्ट ( )4) चिन्ता (5) (स्वभाव) प्रकृति (6) (बीमारी आदि से उत्पन्न) विकृति (7) देव (8) पुण्य और (9पाप। (यथा –

श्रुतं तथानुभूतं च दृष्टं तत् सदृशं तथा।
चिन्ता च प्रकृतिश्चैव विकृतिश्च तथा भवेत्।।
देवाः पुण्यानि पापानि इत्येवं जगतीतले।
स्वप्नग्रहाः नव भुवि भावाः भवन्ति हि।

और इच्छा आदि का अन्तर्भाव होगा। दैवी आदेश वाले स्वप्न (सेक्स) प्रकृति और विकृति कारणों में काम उसी व्यक्ति को मिलते हैं जो वात, पित्त, कफ त्रिदोष से रहित होते हैं। जिनका हृदय रागद्वेष से रहित और निर्मल होता - हैं।

देव, पुण्य और पाप भाव वाले तीन प्रकार के स्वप्न सर्वथा सत्य सिद्ध होते हैं। शेष छः कारणों से उत्पन्न स्वप्न अस्थायी एवं शुभाशुभ युक्त होते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार स्वप्नों के सात भेद बतलाये गये हैं। **'स्वप्नः सप्तविधः स्मृतः'** के अनुसार क्रम से १. दृष्ट २. श्रुत, ३. अनुभूत ४. वातज ५. पित्तज ६. कफज तथा ७. भावज ये सात प्रकार के स्वप्न होते हैं। उनमें से प्रथम तीन दृष्ट, श्रुत एवं अनुभूत अतीत की घटनाओं से सम्बन्ध रखते हैं। इनके बाद के तीन शारीरिक असन्तुलन से सम्बन्धित हैं। इन्हें वातज, पित्तज एवं कफज कहा जाता है। अन्तिम सातवाँ भेद भावज कहलाता है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वप्न माना

जाता है, क्योंकि यह भावी किसी घटना की सूचना देता है तथा यह रात्रि के अन्त में तथा ब्राह्ममुहूर्त्त के पूर्व आता है। अन्य स्वप्नों का कोई काल नहीं होता, वे किसी भी समय आ सकते हैं।

स्वप्नों के लक्षण –

१. दृष्ट – पूर्व में देखी गई कई घटनाओं का मिश्रण एक नये रूप में दिखाई देता है। जैसे – कहीं एक सरोवर देखा था, कहीं विशाल वृक्ष देखा था, कहीं सुन्दर युवती देखा था। इन समस्त घटनाओं को मिलाकर स्वयं को उनके साथ सपनों में देखा जा सकता है। इस प्रकार का स्वप्न दृष्ट कहलाता है।

२. श्रुत – श्रुत का शाब्दिक अर्थ है – सुना गया है। कभी कहीं पर सुनी गयी कोई घटना या घटनायें या उससे मिलती जुलती घटना स्वप्न में आना श्रुत स्वप्न कहलाता है।

३. अनुभूत – कभी- कभी व्यक्ति अनेक प्रकार के चिन्तन में मग्न रहते हुए सो जाता है तथा वह चिन्तन उसके मस्तिष्क में विद्यमान रह जाता है, तो वही अवसर पाकर दृश्य रूप में दिखलाई पड़ता है। जिसे अनुभूत स्वप्न कहते हैं।

४. वातज – शरीर में वायु विकार बढ़ जाने से मनुष्य अपने आपको हवा में उड़ता हुआ देखता है, ऐसी स्थिति में स्वप्न को वातज स्वप्न कहते हैं।

५. पित्तज – पित्त प्रकोप से जब निद्रा बाधित होती है उस समय अग्नि की ज्वाला, पित्त वस्तुऐं तथा हिंसक पशु आदि दिखलाई पड़ते है। ऐसे स्वप्न को पित्तज कहते हैं।

६. कफज – कफज प्रकोप होने पर स्वप्न में प्यास का लगना, पानी में डूबना, तैरना आदि जलीय स्वप्न आते हैं, इन्हें कफज स्वप्न कहते हैं।

७. भावज – इसमें मृत व्यक्ति द्वारा कुछ प्राप्त करना, प्रिय व्यक्ति का वियोग, अपनी मृत्यु, सर्पदंश आदि सुखद एवं दु:खद दोनों प्रकार के स्वप्न आते हैं। ऐसे स्वप्न भावज कहलाते हैं।

मैथुन, हास्य, शोक, भय, मूत्रमल और चोरी के भावों से उत्पन्न स्वप्न व्यर्थ होते हैं-

रतोर्हासाच्च शोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयो:।
प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत्।।

आचार्य बृहस्पति के मतानुसार दश इन्द्रियाँ और मन जब निश्चेष्ट होकर सांसारिक चेष्टा से, गतिविधियों से पृथक् होते हैं तो स्वप्न उत्पन्न होते हैं। इस परिभाषा के अनुसार विदेशी विचारकों के इस कथन को बल मिलता हैं जिसमें वे स्वप्न का मुख्य कारण जाग्रत अवस्था के दृश्यों को मानते हैं-

सर्वेन्द्रियाण्युपरतौ मनो ह्युपरतं यदा।
विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति।।

आचार्य बृहस्पति द्वारा प्रदत्त स्वप्न की यह अवस्था सूचित करती हैं कि प्रत्यक्ष रूप से शरीर का कोई भी भाग जब तक काम करता रहेगा स्वप्न नहीं आयेगा। यहाँ तक कि मन को भी शिथिल होकर निद्रित होना आवश्यक हैं। बच्चे जब स्वप्न को देखकर हंसते या रोते हैं तब धीरे से उनके शरीर को छूने मात्र से स्वप्न भंग हो जाता हैं। कुछ लोगों का

मानना हैं कि प्रगाढ़ निद्रा की अवस्था में स्वप्न नहीं आते। यह सिद्धान्त वाक्य नहीं हैं। निद्रा की प्रगाढ़ता में भी स्वप्न की तरंगे उठती हैं।

स्वप्न देखने के लिए चाक्षुष प्रत्यक्ष कारणों का होना आवश्यक नहीं हैं। यह सत्य हैं कि स्वप्न में उन्हीं वस्तुओं का दर्शन होता हैं जिन्हें हम जाग्रत अवस्था में कभी न कभ देखे हुए होते हैं; परन्तु दुर्लभ ही सही पर वैसे भी स्वप्न आते हैं जिन्हें हम कभी पूर्व प्रत्यक्ष नहीं मान सकते। उदाहरण के तौर पर अदृष्य पूर्व भूमि, दूसरे लोक के दृश्य, आकाश गंगा आदि। स्वप्नों का अवतरण मानस लोक से ही होता है, पर दैविक स्वप्न में मन उपकरण बनता हैं। अतः स्वप्न को मानस से अतिरिक्त व्यापार या मानस का व्यापार दोनों ही नहीं की सकते। ऋषियों ने स्वप्न को उतना ही सहज माना हैं जितने प्राकतिक घटनाओं को जैसेसूर्यादय -, सूर्यास्त। पाप पुण्य से उत्पन्न स्वप्न 'अपूर्व घटना' की कोटि में आते हैं।

स्वप्न में आवाजें आती हैं। इन आवाजों का दृश्य विहीनता के बावजूद स्वप्न कोटि में रखा जा सकता हैं ओर ये आवाजें कभीकभी पूर्ण सत्य भी सिद्ध होती हैं। ऐसे स्वप्नों को कर्णेन्द्रिय प्रधान- स्वप्न कह सकते हैं। स्वप्न देखने में सर्वाधिक बिम्ब चाक्षुष ही होते हैं। शेष इन्द्रियाँ चाक्षुष बिम्बों का सहयोग मात्र करती हैं। अतः प्रयोग बनता हैं स्वप्नद्रष्टा, स्वप्नजीवी, स्वप्नलोक आदि। जन्मान्ध व्यक्तियों को जो स्वप्न आते हैं या आयेगें वे अधिक मात्रा में दृश्यविहीन होंगे। स्वप्न लाल, पीले, काले, नीले, उजले रंगो से युक्त भी हो सकते हैं और रंगविहीन भी। इस प्रकार या कहा जा सकता है कि दृश्य प्रतीकों के बिना भी स्वप्न आ सकते हैं। स्वप्न का दर्शन, स्वप्न का श्रवण और स्वप्न का स्पर्शन भी हो सकता हैं। स्वप्न में हम महसूस कर सकते हैं कि हमारे बगल में कोई सोया हुआ है और कभीकभी उसे स्वप्न मे ही छूकर - आश्वस्त भी हो लेते हैं। स्वप्न सृष्टि के उस अवस्था विशेष का नाम हैं जो जग्रत या चेष्टित अवस्था के विपरीत काल में ही अवतरित होता हैं। स्वप्न अवतरण के काल अपना विशेष महत्व रखते हैं। जिस काल में स्वप्न आ रहा है वह काल उस स्वप्न की चरितार्थता को सिद्ध करता हैं। अतः काल के क्षण, घंटे, प्रहर, संधिकाल भविष्यत् अनुमान या कथन के लिए महत्वपूर्ण नियामक बनते हैं। एक रात को चार खण्ड में बाँट कर स्थूलतः तीनतीन घंटे- का एक याम या खण्ड मान सकते हैं। रात्रि का प्रविभाग निम्नलिखित प्रकार के कर सकते हैं-

)1से तीन धंटे तक (प्रथम प्रहर) प्रदोषकाल (

)2तीन घंटे तक (द्वितीय प्रहर) अर्द्धरात्रि से पूर्व (

)3के तीन घंटे तक और (तृतीय प्रहर) अर्द्धरात्रि से बाद (

)4तीन घंटे तब (चतुर्थ प्रहर) सूर्यादय से पूर्व (

)1) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न एक वर्ष के अंदर अपना फल देता हैं। (2इस खण्ड में देखा गया स्वप्न छः मास के ( ) अंदर अपना फल देता हैं।3) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न तीन मास के अंदर अपना फल देता हैं। (4इस खण्ड में (देखा गया स्वप्न एक वर्ष के अंदर अपना फल देता। ब्राहामुहूर्त्त में देखा गया स्वप्न उसी दिन अपना फल देता हैं।

अनिष्टकारी स्वप्नों को देखकर जो व्यक्ति सो जाता हैं और बाद में शुभ स्वप्नों को देखता है वह अशुभ फल नहीं प्राप्त करता। अतः अनिष्ट स्वप्न को देख कर फिर से सो जाना चाहिए-

अनिष्टं प्रथमं दृष्ट्वा तत्पश्चात् स्वपेत् पुमान्।

आचार्य बृहस्पति के मतानुसार रात्रि के प्रथम प्रहर में देखा गया स्वप्न एक वर्ष में तथा द्वितीय प्रहर में देखा गया स्वप्न आठ मास के अंदर, तृतीय प्रहर में देखा गया स्वप्न तीन मास में, चतुर्थ प्रहर में देखा गया स्वप्न एक मास में तथा अरूणोदय बेला या ब्राहामुहूर्त में देखा गया स्वप्न दश दिन के अन्दर अपना फल देता हैं-

स्वप्ने तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः।
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके।।
चतुर्थयामे यः स्वप्नो मासे स फलदः स्मृतः।
अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत्।।

सूर्योदय काल में स्वप्न देखकर जाग जाने के बाद वह स्वप्न अपना तत्काल फल देता हैं। दिन में मन में सोच कर सोने के बाद यदि उसी का स्वप्न निर्देशात्मकि आया तो समझें यह स्वप्न शीघ्र ही अपना फल देगा।

प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तत्क्षणं यदि बोधितः।
दिने मनसि यद् दृष्टं तत्सर्वच लभेद् ध्रुवम्।।) ब्रह्मवैवर्तमहापुराणम्, 77/7)

कफ प्रधान प्रकृति वाला व्यक्ति जल तथा जलीय पदार्थों का सर्वाधिक स्वप्न देखता हैं। वातप्रधान प्रकृति वाला व्यक्ति हवा में उड़ता हैं और ऊँचाई पर चढ़ता तथा ऊँचाई से कूदता हैं। पितृ प्रकृति वाला व्यक्ति अग्नि की लपटों, स्वर्ण तथा ज्वलित चीजों को देखता हैं।

स्वप्न विद्या की विशेषता

भारतीय स्वप्नविदों ने दुःस्वप्न नाशन के लिए कुछ अपूर्व मंत्रों तथा उपायों को खोज रखा हैं। स्वप्न शास्त्र के सभी ग्रन्थों में प्रायशः ये विधान दिये गये हैं। रोग और सूक्ष्म आत्माओं के दुष्प्रभाव से उत्पन्न दुः स्वप्न नाश के लिए वेदों में भी मंत्र दिये गये हैं। इन मंत्रों के प्रभाव से निश्चित ही लाभ मिलता हैं।

इन उपायों को देखने मात्र से प्रतीत होता हैं कि भारतीय ऋषियों ने स्वप्न को दैवत सृष्टि का अंश मान कर उसे पापों का प्रदर्शक या सूचक त-मनुष्य के जन्मान्तरार्जित पुण्यत्व माना हैं।

स्वप्न विद्या में तात्कालिक मृत्यु या शीघ्र आने वाली मृत्यु के लक्षणों को भी दिया गया हैं। इससे सिद्ध होता हैं कि अपमृत्यु के सूचक लक्षण चाहे वे जिस कारण से उत्पन्न होते हों स्वप्न की परिधि में आते हैं।

दुःस्वप्न, दुःस्वप्न नाश और आसन्न मृत्यु लक्षण स्वप्न विद्या के अन्तर्गत आने वाले विषय हैं।

कुछ स्वप्नों की व्याख्या उनकी प्रकृति के आधार पर की जा सकती हैं। सभी प्रकार के सफेद पदार्थ स्वप्न में दिखने पर शुभ फल देते हैं कपास, भस्म, भात और मट्ठा को छोड़ कर। इसी प्रकार काली वस्तुएं गो, हाथी, देवता, ब्राह्मण और घोड़ा छोड़कर सभी प्रकार का अनिष्ट फल देती हैं-

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि
कार्पास भस्मौद्रतक्रवर्ज्यम्।
सर्वाणि कृष्णान्यतिनिंदितानि
गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम्।।

संसार में जितने शुभ पदार्थ हैं वे आवश्यक नहीं कि स्वप्न में दिखलायी पड़ने पर शुभ फल ही दें। ठीक इसी तरह सभी प्रकार के अशुभ पदार्थ स्वप्न में दृष्ट होने पर प्रायशः शुभ फल के सूचक होते हैं। यथा-

लौकिकव्यवहारे ये पदार्थाः प्रायशः शुभाः।
सर्वथैव शुभास्ते स्युरिति नैव विनिश्चयः।।

'स्वप्न कमलाकर' ग्रन्थानुसार स्वप्नों के शुभाशुभ फल -

स्वप्नमध्ये पुमान् यश्च सिंहाश्वगजधेनुजैः।
युक्तं रथं समारोहेत् स भवेत् पृथवीपतिः।।
श्वेतेन दक्षिणकरे फणिना दंश्यते च यः।
पंचरात्रे भवेत्तस्य धनं दशसहस्त्रकम्।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अपने को सिंह, घोड़ा, हाथी, बैल से युक्त रथ पर चढ़ा हुआ देखता हैं वह राजत्व को प्राप्त करता हैं। जिस व्यक्ति के दक्षिण हाथ में सफेद सर्प काटता हैं वह पाँच रात के अन्दर दश हजार धन प्राप्त करता हैं। यहाँ) ।(दशसहस्त्रकम् उपलक्षण है जिसका अर्थ है विपुल धन

मस्तकं यस्य वै स्वप्ने यश्च स्वप्ने च मानवः।
स च राज्यं समाप्नोति च्छिद्यते वा छिनत्ति वा।।
लिङगच्छेदे च पुरूषो योषिद्धनमवाप्नुयात्।
योनिच्छेदे कामिनी च पुरूषाद्धनमाप्नुयात्।।

जो मनुष्य स्वप्न में मस्तक काटे या जिसका मस्तक काटा जाय वे दोनों ही राज्य प्राप्त करते हैं। स्वप्न में यदि पुरूष लिंग को काटता देखे तो वह स्त्रीधन प्राप्त करता हैं। यदि स्त्री योनि भ ंग देखे तो पुरूष धन प्राप्त (या पुरूष से धन) करती हैं।

छित्रा भवेद्यस्य जिह्वा स्वप्ने स पुरूषोऽचिरात्।
क्षत्रियः सार्वभौमत्वमितरो मण्डलेशताम्।।
श्वेतदन्तिनमारूह्य नदीतीरे च यः पुमान्।
शाल्योदनं प्रभुङ्क्ते वै स भुङ्क्ते निखिलां महीम्।।

जिस व्यक्ति की स्वप्न में जिह्व कट जाये तो वह पुरूष क्षत्रिय हैं शीघ्र ही सार्वभौमराजत्व को प्राप्त करता (यदि) । उजले हाथी पर चढ़कर जो व्यक्ति नदीतट (छिनजिह्व के दर्शन से) हैं। क्षत्रिय से इतर वर्ण का व्यक्ति मण्डलेश बनता हैं पर दूध भात खाता है वह समग्र पृथ्वी का भोग करता है अर्थात् राजत्व प्राप्त करता हैं-

सूर्याचन्द्रमसोर्बिम्बं समग्रं ग्रसते च यः।
स प्रसह्य प्रभुङ्क्ते वै सकलां सार्णवां महीम्।।
यः स्वदेहोत्थितं मांसं परदेहोत्थितं च वा।
स्वप्ने प्रभुङ्क्ते मनुजः स साम्राज्यं समश्नुते।।

जो व्यक्ति स्वप्न में सूर्य और चन्द्रमा का संपूर्ण विम्ब ग्रस लेना हैं वह बलपूर्वक समुद्र सहित समग्र पृथ्वी का भोग करता हैं। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर का मांस अथवा दूसरे के शरीर का मांस खाता है वह साम्राज्य को संप्राप्त करता हैं।

प्रासाद श्रृङ्गमासाद्यास्वाद्य चात्रं स्वलंकृतम्।

अगाधेऽम्भसि यस्तीर्यात्स भवेत् मृथिवीपतिः।।

छर्दिं पुरीषमथवा यः स्वदेत्र विमानयेत्।

राज्यं प्राप्नोति स पुमानत्र नास्त्येव संशयः।।

राजभवन के उच्च श्रृंग पर चढ़ कर जो व्यक्ति उ (चोटी)त्तम पक्वान्न को खाता है अथवा जो व्यक्ति स्वप्न में अगाध जल में तैरता दिखलाई देता हैं वह पृथिवीपति यानि राजा होता हैं, स्वप्न में जो व्यक्ति वमन और विष्ठा को स्वाद लेकर खाता है, उसकी अभक्ष्य मानकर अवज्ञा नहीं करता वह व्यक्ति राज्य को प्राप्त करता हैं। इसमें संदेह नहीं हैं।

मूत्रं रेतः शोणितं च स्वप्ने खादति यो नरः।

तैरङागभ्यञजनं यश्च कुरुते धनवान् हि सः।।

नलिनीदलशय्यायां निषण्णः पायसाशनम्।

यः करोति नरः सोऽत्र प्राज्यं राज्यं समश्नुते।।

जो व्यक्ति स्वप्न में मूत्र, रेत एवं रक्त को खाता है तथा शरीर के अंगों में उबटन या तेल लगाता (वीर्य या रज) हैं वह धनवान् होता हैं। कमल के पत्रों पर बैठकर जो व्यक्ति खीर को खाता है वह प्रकृष्ट एवं विशाल राज्य को प्राप्त करता हैं।

फलानि च प्रसूनानि यः खादति च पश्यति।

स्वप्ने तस्याङगणे लक्ष्मीर्लुठत्येव न संशयः।।

यः स्वप्ने चापसंयोगः बाणस्य कुरुते सुधीः।

सर्वं शत्रुबलं हन्यात्तस्य राज्यमकण्टकम्।।

स्वप्‌न में जो व्यक्ति फलों और फूलों को खाता है या देखता है, उसके आँगन में लक्ष्मी लोटती हैं। इसमें संदेह नहीं करना चाहिए। स्वप्न में जो व्यक्ति धनुष की डोरी पर बाण का संधान करता हैं वह अपने शत्रुओं को मारकर निष्कंटक राज्य प्राप्त करता हैं।

स्वप्ने परस्य योऽसूयां वधं बन्धनमेव च।

यः करोति पुमान् लोके धनवान् जायते तु सः।।

स्वप्ने यस्य जयो वै स्याद्रिपूणां च पराजयः।

स चक्रवर्ती राजा स्यादत्र नास्त्येव संशयः।।

जो दूसरे से द्वेष करता हैं, वध या बन्धन करत हैं वह धनवान् होता हैं। स्वप्न में जीत हो व शत्रु की हार तो निश्चय ही व्यक्ति चक्रवर्ती राजा बनता हैं।

रौप्ये वा का´चने पात्रे पायसं यः स्वदेन्नरः।

तस्य स्यात् पार्थिवपदं वृक्षे शैलेऽथवा स्थिरः।।

शैलग्रामवनैर्युक्तां भुजाभ्यां यो महीं तरेत्।

अचिरेणैव कालेन स स्याद्राजेति निश्चितम्।।

चाँदी या सोने के पात्र में जोव्यक्ति खीर का आस्वाद लेता है वह राज्यत्व को प्राप्त करता हैं। ठीक यही फल जंगल से युक्त पृथ्वी को अपनी भुजाओं से तैरकर जो व्यक्ति -वृक्ष या पर्वत पर स्वप्न में चढ़ने का होता हैं। पर्वत (राज्यत्व) पार करता हैं वह शीघ्र ही राज्यत्व को प्राप्त करता हैं।

यः शैलंगङगमारूह्योत्तरति श्रममन्तरा।
स सर्वकृतकृत्यः सन् पुनरायाति वेश्मनि।।
विषं पीत्वा मृति गच्छेत् स्वप्ने यः पुरुषोत्तमः।
स भोगैर्बहुभिर्युक्तः क्लेशाद् रोगाद् विमुच्यते।।

अशुभस्वप्नफलम्-

अतः परं प्रवक्ष्यामि स्वप्नानां फलमन्यथा।
यतो ज्ञास्यन्ति भूलोकेऽशुभं यत्स्वल्पबुद्धयः।।
आयुधानां भूषणानां मणीनां विदू्रमस्य च।
कलकानां च कुप्यानां हरणं हानिकारकम्।।

शुभ स्वप्न प्रकरण के पश्चात् स्वप्न के अन्यथा फल को कहूँगा जिसे जानकर अल्पबुद्धि वाले मनुष्य पृथ्वी लोक में अशुभ फल को जान सकेंगे। स्वप्न में हथियारो, आभूषणों, मणियों, मूँगा, स्वर्ण तथा ताम्बे का हरण या चोरी अशुभ फल को देता है। (हानि)

हास्ययुक्तं नृत्यशीलं वित्रस्तं केशवर्जितम्।
स्वप्ने यः पश्यति नरं स जीवेन्मासयुग्मकम्।।
कर्णनासाकरादीनां छेदनं पङकमज्जनम्।
पतनं दन्तकेशानां बहुमांसस्य भक्षणम्।।

हँसता हुआ, नृत्य करता हुआ, लम्बे चौड़े तथा बालरहित मनुष्य को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह दो मास तक जीवित रहता है। कान, नाक, भुजाओं का कट जाना, कीचड़ में डूबना, दाँतों और बालों का गिरना, अत्यधिक मांस खाना-

गृहप्रसादभेदं च स्वप्नमध्ये प्रपश्यति।-
यस्तस्य रोगबाहुल्यं मरणं चेति निश्चयः।।
अश्वानां वारणानां च वसनानां च वेश्मनाम्।
स्वप्ने यो हरणं पश्येत्तस्य राजभयं भवेत्।।

का राजमहल का फट जाना जो व्यक्ति स्वप्न के बीच देखता है वह अनेक रोगों से घिर जाता है (घर) मकान अथवा उसकी मृत्यु हो जाती हैं। ऐसा निश्चित समझना चाहिए। घोड़ो का, हाथियों का, वस्त्र का तथा भवन स्थान आदि का हरण जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है उसको राजभय उत्पन्न होता हैं। (लूटपाट)

स्वस्यवपत्नभिहारे च लक्ष्मीनाशो भवेद् धुरवम्।
स्वप्यापमाने संक्लेशो गोत्रस्त्रीणां च विग्रहः।।
स्वप्नमध्ये यस्य पुंसो ह्रियते पादरक्षणम्।

पत्नी च म्रियते यस्य च स्याद्देहेन पीड़ितः।।

स्वयं) जो व्यक्ति स्वप्न में अपनी पत्नी का हरण देखता है उसका धन निश्चित नाश को प्राप्त करता है। अपना अपमान देखना क्लेश उत्पन्न करता है तथा संगोत्रा महिलाओं से कलह कराता हैं। जो स्वप्न में अपने जूता की चोरी (का देखता है अथवा पत्नी की मृत्यु देखता है उसका शरीर रोग से पीड़ित हो जाता हैं यानि वह व्यक्ति शरीर कष्ट (स्वप्न में) को प्राप्त करता हैं।

स्वप्ने हस्तद्वयच्छेदः यस्य स्यात्स नरो भुवि।
माताविहीनः स्याद् गवां वृन्दैश्च मुच्यते।।-पितृ-
दन्तपाते द्रव्यनाशः नासाकर्णप्रकर्तने।
फलं तदेव व्याख्यातमत्र नास्त्येव संशयः।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति के दोनों हाथ कट जाते हैं वह पृथ्वी पर मातापिता से हीन हो जाता हैं। साथ ही उसका - गायों का समूह भी नष्ट हो जाता हैं। यदि स्वप्न में दाँव गिरे तो धन नाश होता हैं, नाककान कटने- पर भी धननाश समझना चाहिए। इस स्वप्न के फल में तनिक भी सन्देह नहीं करना चाहिए।

चक्रवातं च यः पश्येदङेग वातं च यः स्पृशेत्।
शिखा चोत्पाटयते यस्य स म्रियेताचिराद्धुरवम्।।
स्वप्नमध्ये यस्य कर्णे गोमीगोधाभुजङगमाः।
प्रविशन्ति पुंसां कर्णे रोगेण स विनश्यति।।

अग्निपुराण के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल विचार -

स्वप्न	स्वप्नफल
नाभि के अतिरिक्त अंगों से तृण व वृक्ष का उगना	अशुभ सूचक
सिर पर कांस्य या सीसा का टूटना	अशुभ सूचक
मुण्डन देखना	अशुभ सूचक
अपने को नग्न देखना	अशुभ सूचक
मलिन वस्त्र पहनना	अशुभ सूचक
उबटन लगाना	रोग ग्रस्त होना
कीचड़ में फँसना	विपत्ति में फंसना
ऊँचाई से गिरना	विपत्ति में फंसना
अपना विवाह देखना	विपत्ति में फंसना
गीत गाना	अशुभ सूचक
वीणा बजाते हुए मजाक करना	अशुभ सूचक
मजाक करना-हंसी	अशुभ सूचक
झूला झूलना	अशुभ सूचक
कमल पुष्प प्राप्त करना	अशुभफलकारी

लोहा या लौहसामग्री प्राप्त करना	अशुभफलकारी
सर्प मारना	अशुभफलकारी
लाल पुष्प से लदा वृक्ष देखना	अशुभफलकारी
चाण्डाल का देखना	अशुभफलकारी
सूअर, कुत्ता, गदहा, ऊँट पर चढ़ना	मृत्युभय उत्पन्न होना
पंक्षियों का माँस खाना	मृत्युभय उत्पन्न होना
तेल पीना, खिचड़ी खाना	मृत्युभय उत्पन्न होना
माता के पेट में प्रवेश करना	विपत्तिकारी
चिता पर चढ़ना या लेटना	मृत्युभयकारी
इन्द्रध्वज को टूटते देखना	विपत्तिकारी, राज्यनाशक
सूर्यचन्द्रमा का टूटकर गिरते देखना-	विपत्तिकारी
दिव्य अन्तरिक्ष तथा भूमिज उत्पात को देखना	अशुभसूचक
देवता, ब्राहमण और राजा को क्रोधित देखना	अशुभसूचक
स्वप्न में नाचना तथा हँसना	अशुभसूचक
स्वप्न में अपना विवाह देखना	अशुभसूचक
विवाह का गीत सुनन ा	अशुभसूचक
रहित अन्य वाद्यों को बजाना (वीणा) तंत्रीवाद्य	अशुभसूचक
जलस्त्रोत को नीचे गिरते देखना	अशुभसूचक
गोबर सने जल में स्नान करना	विपत्तिकारक
स्वप्न में पर्वत, महल, हाथी, घोड़ा बैल पर चढ़ना	शुभफलकारी
आकाश में सफेद फूल एवं सफेद वृक्षों कोदेखना	शुभफलकारी
नाभी में तृण एवं वृक्ष उत्पन्न होना देखना	शुभफलकारी
शरीर में अनेक भुजाओं को उत्पन्न होना देखना	शुभफलकारी
अनेक शिर को देखना	शुभफलकारी
सफेद बाल को देखना	शुभफलकारी
सफेद पुष्पमाला धारण करना	शुभफलकारी
सफेद वस्त्र धारण करना	शुभफलकारी
ताराओं को पकड़ना-सूर्य-चन्द्रमा	शुभफलकारी
तारा को साफ करना-सूर्य-चन्द्र	शुभफलकारी
इन्द्रध्वज का आलिंगन करना	शुभफलकारी
ध्वज फहराना	शुभफलकारी
पृथ्वी से फूटती जलधारा को पकड़ना	शुभधनदायी

जलधारा को रोकना	शुभधनदायी
शत्रुओंको पराजित करना	विजय एवं धनदायी
कलह तथा जुआ में विजयी होना	विजय एवं धनदायी
युद्ध में विजयी होना	विजय एवं धनदायी
खीर खाना	शुभ एवं धनदायी
रक्तस्नान करना	शुभ एवं धनदायी
लता का रसपान करना-सोम	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
रक्तपान करना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
दूध पीना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
पृथ्वी पर अस्त्र चलाना	विजय एवं समृद्धि पाना
निर्मल आकाश देखना	शुभफलकारी
घोड़ी के स्तनों को मुख से पीना-हथिनी-सिंहनी-गाय-भैंस	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
देवतागुरु को प-ब्राहमण-्रसन्न देखना	धनसमृद्धि की प्राप्ति
स्वयं का जलाभिषेक देखना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
श्रृंगी द्वारा दुग्धाभिषेक देखना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
चन्द्रमा से बहते जल द्वारा अपना अभिषेक देखना	राजत्व प्राप्ति
अपनी मृत्यु देखना	शुभत्वप्राप्ति, आयुवृद्धि
दूसरे द्वारा अग्नि प्राप्त करना	राज तथा धनप्राप्ति
अग्निदेव द्वारा गृहदाह देखना	शुभत्व प्राप्ति
छत्र तथा चामरों को प्राप्त करना	राजत्व प्राप्ति
वीणावादन द्वारा अपना अभिवादन देखना	राज तथा शुभत्वप्राप्ति
स्वप्न के अन्त में राजागो को देखना-वृष-स्वर्ण-घोड़ा-हाथी-	पुत्रप्राप्ति की सूचना
बैल तथा हाथी पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
छत तथा पर्वत पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक

मत्स्यपुराण के अनुसार स्वप्न का शुभाशुभ फल विचार

स्वप्न	स्वप्न फल
घोड़ों को मारना	अशुभपराजयसूचक-
आकाशमण्डल को लाल देखना	अशुभपराजयसूचक-
भालू पर चढ़ना	मृत्युपराजयसूचक-
जलाशय में स्नान करके यात्रा करना	मृत्युपराजयसूचक-
मकानों को ढहते देखना	अशुभधनहानिसूचक-
मकानों की धुलाई पुताई देखना	अशुभधनहानिसूचक-

भालू तथा मनुष्य के साथ क्रीड़ा करना	अशुभसूचक
परस्त्री से अपमानित होना	अशुभसूचक
परस्त्री के कारण रोग होना	अशुभ एवं रोग सूचक
परस्त्री से क्रीड़ा करना	अशुभ एवं रोग सूचक
पृथ्वी तथा समुद्र को ग्रास बनाना	शुभ एवं राजप्रदायी
पृथ्वी एवं आकाश को आँतों से लपेटना	राजत्वसूचक
गायों को जल से स्नान करना	राज्यलाभसूचक
पर्वत शिखर तथा चन्द्रमा पर से गिरना	राज्यलाभसूचक
अपना राज्याभिषेक देखना	राज्यलाभसूचक
जल में तैरना	सम्पत्तिप्राप्ति सूचक
पहाड़ा लाँधना	सम्पत्तिप्राप्ति सूचक
गाय का घर मे-घोड़ा-हाथीं प्रसव देखना	संतान, धनप्राप्ति सूचक
शुभ एवं पूज्य स्त्रियों को प्राप्त करना तथा उनका आलिंगन करना-	शुभसूचक
जंजीर से शरीर को बाँधा जाना	शुभ एवं राज्यप्राप्तिसूचक
जीवित राजा से मिलना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
जीवित मित्र से मिलना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
जलाशयों को देखना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
देवताओं को देखना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल विचार –

स्वप्न	**स्वप्न फल**
पर्वत तथा वृक्षों पर चढ़ना-राजमहल-घोड़ा-हाथी-गाय	धनलाभकारी
भोजन करना, रोना, गोद में वीणा लेकर बजाना	कृषिभूमि का लाभ
शस्त्र और अस्त्र से घायल होना	धनप्राप्तिकारक
शरीर में फोड़ा होना	प्रबल धनागमकारी
पड़ना (कीड़ा) शरीर में क्रिमी	प्रबल धनागमकारी
विष्ठा और खून से सन जाना	प्रबल धनागमकारी
अगम्यागमन करना	सुन्दरपत्नी प्राप्त कारक
करना (भक्षण) वीर्यपान	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
नरक में प्रवेश करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
नगर में प्रवेश करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
अमृत को पीना-समुद्र-रक्त	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
हाथीगाय को प्राप्त करना-बैल-स्वर्ण-राजा-	कुटुम्बकीर्तिविपुलधनलाभ

कन्य-अन्न-दीपक ा रथ को देखना- ध्वज-छत्र-फूल-फल- कुटुम्बविपुलधनलाभ-कीर्ति-
जल से भरा घड़ा देखना श्रीवृद्धिकारक
फूलपान (हवन) शुभअग्नि-ब्राहमण, मंदिर को देखना श्रीवृद्धिकारक
सफेद अन्न देखना श्रीवृद्धिकारक
नट तथा वेश्या को देखना श्रीवृद्धिकारक
गोघृत देखना-गोदुग्ध धन एवं पुण्यप्राप्तिकारक
मालपूआ) तथा शुभमिष्ठान्न (पंचामृत) मधु-घी-दूध-दही-कमलपत्र-खीर, मोहनभोग आदि(
- राजपद की सुनिश्चितप्राप्ति
पक्षियों का मांस खाना अत्यधिक एवं शुभवार्ताप्राप्ति
पादुका प्राप्त करना-छत्र धनधान्यप्राप्ति-
निर्मल एवं तीक्ष्णतलवार को देखना धनधान्यप्राप्ति-
आसानी से नदी पार करना प्रधान बनना (उच्च)
फलदार वृक्ष देखना निश्चित धनप्राप्ति
सर्पद्वारा काटा जाना अर्थलाभ
चन्द्रमा के मण्डल को देखना-सूर्य रोगकारगार मुक्ति-
क्रौंची को देखना-मुर्गी-घोड़ी सुन्दरपत्नी प्राप्तिकारक
जंजीर से बंधा देखना प्रतिष्ठा एवं पुत्रप्राप्तिकारक
भात तथा-नदीतट पर दही खीर को कमलपत्र पर खाना राजा बनने की सूचना
फटे कमलपत्र पर खाना राजा बनने की सूचना
सर्प को देखना-बिच्छू-जोंक धनप्रतिष्ठालाभ-विजय-पुत्र-
सिंहधारीपशु, दाँत से काटने वाले पशु, सुअर, वानर से पीड़ित होना - राजा होकर विपुल धनलाभ
मछलीहीरा को देखना-चंदन-शंख-मोती-माँस- विपुलधनप्राप्तिकारक
स्वर्ण देखने के बाद विष्ठा देखना-खून-मदिरा धनप्राप्तिकारक
शिवप्रतिमा देखना-शिवलिंग विजय एवं धनप्राप्तिकारक
फुला बिल्ववृक्ष देखना-फला धनप्राप्तिकारक
फुला आम्रवृक्ष देखना-फला धनप्राप्तिकारक
देखना (हवनाग्नि) जलती अग्नि श्रीलक्ष्मी प्राप्ति-

'ज्योतिष रहस्य' ग्रन्थानुसार शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

क्रम संख्या	**शुभ स्वप्न**	**क्रम संख्या**	**अशुभ स्वप्न**
1.	ब्राहमण बालक को देखना	1.	अत्यन्त वृद्धा और काले शरीर वाली या नंगी स्त्री का नाचना
2.	आभूषणों से विभूषित, पति पुत्रों से युक्त या सफेद	2.	खुले केशवाली शूद्रा या विधवा देखना

	वस्त्रवाली सुन्दरी स्त्री देखना		
3.	ब्राहमण, राजा, देवता, गुरु	3.	सिर और छाती पर ताड़ के या कोई भी काले रंग के फलों का गिरना
4.	सफेद कमल, सरोवर, राजहंस	4.	मैला कुचैला, विकत आकार तथा रूखे केशवाले ग्लेच्छ या गलित कुष्ट से युक्त नंगा शूद्र देखना
5.	सूर्य, चन्द्र, तारे, इन्द्रधनुष-	5.	सधवा, पुत्रवती, सती स्त्री या शिखा खोले ब्राहमण का रोष, कुपित गुरु, संन्यासी या वैष्णव को देखना
6.	फल फूलयुक्त आम, नीम, नारियल, विशाल मदार या केला का वृक्ष	6.	घड़े का फोड़ा जाना
7.	सफेद साँप का काटना	7.	अंगार, भस्म या रक्त की वर्षा
8.	महल, पर्वत, वृक्ष, सिंह, हाथी, घोड़ा या नाव देखना या उन पर चढ़ना	8.	वानर, कौवा, कुत्ता, भालू, सुअर, गदहा, बैल, भैंस गीध, कंक, घड़ियाल, सियार देखना
9.	वीणा बनाना	9.	नंगी स्त्री का नृत्य
10.	प्रियान्न दही, दूध, खीरादि खाना	10.	अपने शरीर में किसी का तेल लगाना
11.	स्वयं के अंगों में कोड़े या विष्टा लगना	11.	नृत्य गीत युक्त विवाहोत्सव देखना
12.	रोते रहना	12.	सूर्य चन्द्र निस्तेज या ग्रहण लगा हुआ देखना
13.	हाथों में सफेद धान्य, सफेद फूल दिखाई देना	13.	उल्कापात, धूमकेतु, भूकम्प, राष्ट्रविप्लव-, आँधी, तूफान आदि उत्पात देखना
14.	अपने को चंदनचर्चित - देखना	14.	वृक्ष की डालियाँ, पर्वतश्रृंग-, सूर्य मण्डल या तारे-चन्द्र-टूटते दिखाई देना
15.	अपने को समुद्र में देखना	15.	हाथ से दर्पण, दण्डादि का गिरकर टूटना
16.	रक्त से स्नान, शरीर में रक्त लगा देखना	16.	गले का हार या माला आदि का टूटना
17.	अपना अंग छिन्नभिन्न - विक्षत देखना-या क्षत	17.	काले वस्त्रयुक्त किसी व्यक्ति को अपना आलिंगनचुम्बर करते देखना-
18.	अपने शरीर में मेद या पीव लिपटा देखना	18.	काली प्रतिमा देखना
19.	सोना, चाँदी, सफेद मणि रत्न, मोती, मानिक, भरे हुए कलश का जल देखना	19.	भस्मपुंच-, हड्डियों का ढेर, ताड़ का फल, केश, नाखून, कौड़ियाँ, कवाईत, बुझे अंगार (कोयला)देखना
20.	बछड़ा सहित गऊ, साँड, मोर, तोता, सारस, हंस, चील खंजरीट देखना	20.	मरघट, चिता पर रक्खा मुरदा, कुम्हार का चाक, तेलो का कोल्हू, अधजले या सूखे काठ, कुश, तृण, चलता हुआ धड़, मुरदे का चिल्लाता हुआ मस्तक, आग से जला हुआ स्थान देखना
21.	देवपूजा-, वेदध्वनि क-ा शुष्क श्रवण, प्रतिमा, श्रीकृष्ण की प्रतिमा, शिव-लिंग देखना	21.	भस्मयुक्त सूखा तालाब, जली मछली, लोहा, दावानल से जलकर बुझा - हुआ वन देखना

आधुनिक मतानुसार स्वप्न विचार –

आधुनिक कुछ मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार मनुष्य की अतृप्त इच्छायें ही स्वप्न में आती है। इच्छाओं को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि मनुष्य की इच्छायें चार प्रकार की होती है –

१. ज्ञात इच्छा – जो इच्छा सरलता पूर्वक ज्ञात हो सके।

२. अज्ञात इच्छा – वह इच्छा जो मन में रहती है पर प्रकट नहीं हो पाती है।

३. अपरिस्फुट इच्छा – ऐसी इच्छायें जो ज्ञात होती हैं किन्तु मन में उठती और विलीन होती रहती हैं।

४. अनुमानेच्छा – अपरिस्फुट इच्छाओं में से कुछ का अनुमान लगा लेना किन्तु स्पष्ट ज्ञान न होना।

इसके अतिरिक्त भी कुछ लोगों ने अन्य दो इच्छाओं की बात कही है।

५. इच्छाभाष – वे इच्छायें जो मन में आभासित हों किन्तु उन पर मन का ही विश्वास न हो।

६. अज्ञात इच्छा – जिन इच्छाओं के उदय या अस्त का ज्ञान न हो सके।

इस प्रकार कुछ लोगों ने इच्छाओं का ४ तो कुछ ने ६ प्रकार बतलाया है।

स्वप्नों का निदान पक्ष -

मानव जितने भी स्वप्न देखता हैं उन सभी के शुभाशुभ परिणामों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अधिकांश स्वप्न शारीरिक विकार तथा मानसिक इच्छाओं से जुड़े होते हैं। उन विकारों या इच्छाओं की परिणति ही **'स्वप्न'** होता है।

यदि स्वप्न अच्छे आते हैं तो मन आनन्दित रहता है। यदि बुरे या डरावने स्वप्न आते हैं तो जागने के पश्चात् भी मन खिन्न या भयभीत रहता है। ऐसी स्थिति में मन को स्वस्थ करने हेतु आचार्यों ने निम्न उपचार बतलाये हैं –

१. प्रात: काल सूर्य को अर्घ्य देकर द्वादशादित्य अर्थात् सूर्य के १२ नामों का स्मरण करना चाहिये।

२. प्रात: काल निम्न मन्त्र का २१ बार जप करना चाहिए –

वाराणस्या: दक्षिणे कोणे कुक्कुटो नाम ब्राह्मण:। यस्य स्मरणमात्रेण दु:स्वप्न: सुस्वप्नो भवेत्।।

३. अपने इष्टदेव का स्मरण करना चाहिए।

इस प्रकार उक्त उपचारों को करने से स्वप्नजनित व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। ऐसा ऋषियों एवं आचार्यों का कथन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. स्वप्न कमलाकर – मूल लेखक – आचार्य श्रीधर
2. प्राच्यविद्यापरिशीलन – आचार्य रामचन्द्र पाण्डेय
3. अग्नि पुराण - मूल लेखक - महर्षि वेदव्यास, मुद्रित प्रति - गीताप्रेस
4. मत्स्य पुराण - मूल लेखक - महर्षि वेदव्यास, मुद्रित प्रति - गीताप्रेस
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण - मूल लेखक – महर्षि वेदव्यास, मुद्रित प्रति - गीताप्रेस
6. स्वप्न विद्या – लेखक - डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
7. ज्योतिष रहस्य – लेखक - जगजीवन दास गुप्ता